Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 28-06-2025, Accepted: 29-07-2025, Published: 13-08-2025
Volume 6, Issue 2, 2025, Page No. 4-5

शिवानी के कथा साहित्य में विकलांग विमर्श

डॉ. आनंद कुमार कश्यप
सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, शासकीय पातालेश्वर महाविद्यालय, मस्तुरी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत
वर्तमान पदस्थापना – विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी, छत्तीसगढ़ शासन, वाणिज्य और उद्योग एवं श्रम विभाग रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
साहित्यकार जब अपनी रचना को आकार प्रकार देता है, तब वह सूजन की प्रक्रिया में चरित्रों को गढ़ता है। उन्हीं चरित्रों के आकार पर अपने कथा को आगे बढ़ाता है। बिना चरित्रों के गद्य में किसी भी विधा में साहित्य का सृजन संभव ही नहीं है। हिन्दी कथा साहित्य की ख्यानाम लेखिका शिवानी जी एक नारी लेखिका होने के बावजूद भी उन्होंने केवल नारी चरित्रों को ही महत्व न देते हुए पुरुष चरित्रों को भी महत्व दिया है। स्त्री और पुरुष, दोनों पात्रों में विकलांग पात्र भी महत्वपूर्ण भूमिका में नजर आते हैं।

मूल शब्दः चरित्रों, हिन्दी कथा साहित्य, शिवानी जी

शिवानी जी के कथा साहित्य में चित्रित विकलांग चरित्र विधि विधान से कहीं दूर रहकर अपनी मस्त अदम्य जिजीविषा को जीवन यापन करते हुए दिखाई दे रहे हैं। उनकी रचनाओं में अनेक चरित्र अपनी गरिमा को प्रस्तुत करते हुए भारतीय समाज और साहित्य को महत्व देते हैं। शिवानी जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से उनके प्रति सहानुभूत ही नहीं बल्कि उन्हें जीने की नई राह और नई दृष्टि भी प्रदान की है। हर संकट में जीने के साथ–साथ आगे बढ़ने के लिए भी प्रेरित किया है।

संक्षिप्त व्याख्या

इनके कथा साहित्य के प्रमुख विकलांग पात्रों का चरित्र चित्रण निम्न प्रकार है–

'भैरवी' की चन्दन

चन्दन एक अपरुप अतुलनीय सौन्दर्य की लावण्यवती थी, उसका सौन्दर्य ही मानो उसके जीवन को ध्वस्त करने का कारण बन जाता है। माँ के नियंत्रण में पली हुई चन्दन को बाहरी दुनिया का कुछ पता नहीं था। अपने चरित्र पर लगे हुए धब्बे के कारण चन्दन को अपना घर परिवार छोड़ना पड़ता है। वह अपने जीवन को समाप्त करने की सोचती है पर वह जीवन और मृत्यु में जीवन को चुनती है। वह अपनी नयी जिन्दगी को स्वीकारती है, वहाँ भी उसका सौन्दर्य ही उसका दुश्मन बन जाता है। विकलांग अवस्था से अच्छी होकर भैरवानंद की बुरी दृष्टि और हवस का शिकार बनने से पहले ही भाग जाती है और एक नये जीवन का प्रारंभ करती है।

राजेश्वरी की सास

प्रस्तुत उपन्यास में राजेश्वरी की सास विकलांग स्त्री के रुप में वर्णन है। वह न देख पाती है और न सुन पाती है। उसके शरीर के दो अवयव कान और और कमजोर है। लेखिका ने राजेश्वरी और उसकी सास के सन्दर्भ में लिखती हैं, "पति के तेरहवीं के पश्चात् आत्मीय स्वजनों से विदा हाने की चतुरा राजेश्वरी ने भविष्य की योजना बना ली। इतनी बड़ी हवेली में, वह अबोध पुत्री और वय भार से जनित होकर बच्ची को भी अधिक अबोध बन गई। अन्धी बहरी साथ को लेकर कैसे रहेगी? तीन कोठरिया अपने लिए रखकर उसने पूरी हवेली गर्ल्स स्कूल बनवाने के लिए दान कर दी। पूरे शहर में उस प्रवासिनी पर्वतीय विधवा युवती के दान की चर्चा चल पड़ी।" अर्थात् राजेश्वरी पर अपने पति की मृत्यु के बाद अपनी बेटी और विकलांग सास की जिम्मेदारी भी आई थी जो वह उस जिम्मेदारी को बखूबी निभाती है।

'कृष्णावेणी' का भास्करण

कृष्णावेणी में चित्रित भास्करन विकलांग चरित्र है। यह शारीरिक दृष्टि से विकलाग है। उसे कुष्ठ रोग है मुहल्ले वाले द्वारा निकाले जाने के पश्चात् कृष्णावेणी भी विदेश जाकर पढ़ने लगती है। कई सालों बाद कृष्णावेणी को अल्मोड़ा के कृष्णश्रम में ही अंधे की छावनी में भास्कर बैठा हुआ दिखाई देता है। उसके पास ही उसकी बंशी पड़ी हुई थी। पर वह उसे उठा ही नहीं सकता था जाना तो दूर था, भास्करन की ऐसी हालत देखकर वेणी उसके आंसुओं को रोक नहीं पाती है क्योंकि उसके उसके दोनों हाथों की अँगुलियाँ झड़कर दो अधूरी मुट्ठियाँ मात्र रह गई है। होठ विहीन उसका वह चेरा वीभत्स बन गया है जैसे कटहल का छिलका। भास्करन उस भयावह अवस्था को वह न देख पाती है और न सह पाती है और आत्महत्या करती है।

'कृष्णावेणी' की माँ लक्ष्मी

वृद्धत्व की अवस्था में कृष्णावेणी की माँ की आँखों में न तो देखने की क्षमता रहती है और न कानों में सुनने की क्षमता होती है। कृष्णावेणी अपनी सहेली से कहती है।
'लाचार हो गई है, न आँखें रह गई हैं न कान। कई बार भाई आकर कह गए हैं यहाँ हमारे साथ यहां अकेली क्या कर रही हो। पर कैसे छोडू आँखे नहीं है तब भी एक एक दीवार का पलस्तर सूंघकर पहचान लेती हूँ, किसका कमरा है।'

'मोहब्बत' की दामिनी

दामिनी एक सुरक्षित वैज्ञानिक की पत्नी है। कुशल नृत्यांगना होने के कारण दूसरों का सहयोग लेने लगी है। विकलांगता के कारण हताश नारी है। उसे दूसरों पर निर्भर रहने का मलाल है।

'मायापुरी' की गोदावरी

गोदावरी पक्षाघात के अधात को विकलांग स्त्री चरित्र है। परिवार के प्रति प्रेम अत्यन्त सजग है। अनुशासनप्रिय है। पति और बच्चों को बेहद वात्सल्य और प्रेम रखने वाली भी है। एक मददगार और दयालु स्वभाव की नारी है। समाज के डर से परिवार की इज्जत बचाकर अपने बेटे को मनचाही लड़की के साथ विवाह करने के लिए तैयार करने पर विवश है।

'मायापुरी' का सतीश

सतीश को एक विमान दुर्वटना से अपने पैर गैवाने पड़ते हैं। वह एक आकर्षक और प्रतिभाशाली नवयुवक है। वह अपने वैवाहिक जीवन को लेकर उदास और अप्रसत्र रहता है। वह जिस लड़की को चाहता है, उसको अपनी धर्मपत्नी बनाने में असफल रहता है। परिस्थिति के सामने उसे झुकना पड़ता है। मध्यमवर्गीय परिवार में माता के कठोर अनुशासन में पला हुआ सतीश नापसंद लड़की के साथ विवाह कर अपने माता–पिता को प्रसन्न रखने का प्रयास करता है, परन्तु मानसिक रूप से टूटा हुआ चरित्र है।

'कृष्णावेणी' की पार्वती

पार्वती शारीरिक रूप से विकलांग चरित्र है। जाने–अनजाने कृष्ण श्रम में असदुल्ला के प्रेमपाश में फँस जाती है। उसकी हवस का शिकार होकर एक बच्ची को जन्म देती है। लेकिन जन्मता उस बच्ची को खत्म करने की कोशिश करती है। पार्वती और असदुाला दोनों कुष्ठरोग से ग्रस्त रहते हैं असदुल पार्वती को धोखा देकर भाग जाता है विकलांगता के बावजूद भी पार्वती नई उँगलियों को तरह तरह की अंगुठियाँ पहनाकर सजने धजने में सही रखने वाली स्त्री है। समाज और रोग के भय से अपने ही कलेजे के टुकड़े को जन्मतः खत्म करने का प्रयास करती है। पार्वती मानसिक और शारीरिक पौड़ा से त्रस्त स्त्री चरित्र है।

'चल खुसरो घर आपने' का शिवमंगल सिंह

शिवमंगल सिंह की मचान टूटने से रीढ़ की हड्डी भी टूट जाती है। पूरी जिन्दगी व्हील चेयर पर बैठकर व्यतीत करने पर विवश होना पड़ता है। दो बार पक्षाघात से वाणी पर होने वाले आघात एवं गोगियाकर बोलने वाला चरित्र है।

'चल खुसरो घर आपने का' कृष्ण कमल सिंह

स्वयं की बंदूक से शिकार पर्ति में अपाहिज हो जाता है। यह कुख्यात चरित्र है, स्त्रियों की ओर बुरी दृष्टि से देखने वाला पुरुष है।

'विवर्त' की ललिता की नानी

विर्वत शिवानी जी द्वारा लिखित एक प्रसिद्ध उपन्यास है, ललिता इस उपन्यास की प्रमुख स्वी चरित्र हैं। इस उपन्यास में ललिता में ललिता की नानी वृद्धावस्था से विकलांग होने के कारण बिस्तर पर ही पड़ी रहती है। तीन बहुओ की सास है लेकिन सुश्रुषा तो केवल उसी मंझली बहु की है। बहुओं के व्यंजन वाणी को सहते हुए विकलांगता के कारण अब कर मृत्यु को निमंत्रण देने वाली स्त्री चरित्र है।

'कालिंदी' का मनोहर जोशी

कालिंदी का मनोहर जोशी विकलांगता के बावजूद भी वह लड़कियों को परेशान करने में कोई कसर नहीं छोड़ता था। अपने दुर्गुणों को लेकर पूरे शहर में बदनाम था। वह एक आँख से काना था। अच्छे लोग उसके मुंह नहीं लगते थे।

'मायापुरी' की दुर्गा

दुर्गा मानसिक रूप से विकलांग पात्र है। वह बच्चों से भरपूर प्रेम रखने वाली है। विपरित परिस्थितियों के कारण अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा और अच्छा जीवन नहीं दे पाती है। वह पति के मृत्यु के कुछ सालों के पश्चात् अपेन तीन पुत्रों की मृत्यु के आघात से मस्तिक विकार से विक्षित्व हो जाती है। विक्षिप्तता के उच्च उन्माद में ही मृत्यु को मले लगाती हैं, वह एक उदार ह्रदय की नारी चरित्र है।

निष्कर्ष

इसी तरह शिवानी के अन्य कथा साहित्य में भी विकलांग पात्र आये है। जैसे मायापुरी की दुर्गा, रितिविलाप का विक्रम किशनुली की किशनुली, चौदह फेरे की बसन्ती अन्या जो विक्षत्वावस्था में कभी अपने बेटे को तो कभी बहू को तो कभी बेटी को पुकारती है। शिवानी जी ने अपने कथा साहित्य में विकलांगों के सूक्ष्म से सूक्ष्म समस्याओं पर प्रकाश डाला है। उनकी रचनाओं में मानसिक शारीरिक आदि अनेक प्रकार के विकलांग पात्र दृष्टिगोचर होते हैं। शिवानी जी अपने कथा साहित्य के माध्यम से विकलांग पात्रों को जीने के लिए दृढ़ संकल्पि करते हुए समाज को आईना दिखाने का काम कर रही है।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी उपन्यास चरित्र चित्रण का विकास डॉ. रणवीर
2. भैरवी शिवानी– पृ. 96
3. वही पू. 7
4. वही पू. 107
5. वही पृ. 48
6. रवि विलाप शिवानीः कृष्णवेची पू. 94
7. मायापुरी शिवानी पू. 16
8. कृष्ण कली– शिवानी पू. 11.
9. शिवानी का कथा साहित्य डॉ. रेविता पू. 89 और विकलांग विमर्श बलभीम कावते
10. वही पृ. 109
11. वही पृ. 99
12. वाही पृ. 103